ज्ञान से अनुभव तक की आध्यात्मिक यात्रा

बाबा आज हम बच्चों से क्या चाहते हैं?

आज संसार में ज्ञान की कमी नहीं है। मनुष्य ने विज्ञान, तकनीक और भौतिक उपलब्धियों में अद्भुत प्रगति की है। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी लोग प्रवचन सुन रहे हैं, पुस्तकें पढ़ रहे हैं, मेडिटेशन सीख रहे हैं और जीवन को बेहतर बनाने के अनेक प्रयास कर रहे हैं। फिर भी एक सच्चाई हमारे सामने बार-बार आती है - थोड़ी सी परिस्थिति आते ही मन अशांत हो जाता है, छोटी-सी बात में क्रोध आ जाता है और संबंधों में तनाव पैदा हो जाता है। ऐसे में एक गहरा प्रश्न उठता है - यदि हम वर्षों से शांति और आत्मज्ञान सुन रहे हैं तो फिर वह हमारे जीवन का स्थायी अनुभव क्यों नहीं बन पा रहा?

यहीं आज परमात्मा शिव बाबा हम बच्चों को एक बहुत महत्वपूर्ण दिशा देना चाहते हैं। बाबा चाहते हैं कि हम केवल ज्ञान के विद्यार्थी बनकर न रहें, बल्कि अनुभवीमूर्त बनें। केवल सुनना, पढ़ना और बोलना ही पर्याप्त नहीं है; अब समय अनुभव की अथॉरिटी जमा करने का है।

बाबा बार-बार कहते हैं कि ब्राह्मण जीवन के चारों विषय - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा सिर्फ पढ़ने या समझने के लिए नहीं है, बल्कि उन्हें जीवन में अनुभव करने के लिए हैं। ज्ञान तब तक अधूरा है जब तक वह हमारे व्यवहार में दिखाई न दे। योग तब तक सम्पूर्ण नहीं जब तक वह हमारी स्थिति को स्थिर और शक्तिशाली न बना दे। धारणा तब तक वास्तविक नहीं जब तक गुण स्वाभाविक न बन जाएं। और सेवा तब तक प्रभावशाली नहीं जब तक हमारी वाणी और वायब्रेशन दूसरों को शांति का अनुभव न कराएं।

आज बाबा हमसे केवल "योग लगाने" की नहीं, बल्कि "योगी जीवन जीने" की अपेक्षा रखते हैं। योग लगाना एक अभ्यास हो सकता है लेकिन योगी जीवन एक निरंतर अवस्था है। जैसे सांस लेना हमारे जीवन का स्वाभाविक हिस्सा है वैसे ही आत्म स्मृति और परमात्म स्मृति भी सहज बननी चाहिए। यदि याद में बैठने के लिए बार-बार संघर्ष करना पड़े तो यह संकेत है कि अभी प्रेम की गहराई बढ़ानी है। क्योंकि जहाँ सच्चा प्रेम होता है, वहाँ मेहनत अनुभव नहीं होती।

बाबा हमें यह भी समझाते हैं कि हमें अपने पुराने संस्कारों और कमजोरियों से लड़ना नहीं है। अंधकार को हटाने के लिए अंधकार से युद्ध नहीं किया जाता, केवल प्रकाश का स्विच ऑन किया जाता है। उसी प्रकार यदि हम अपने स्वमान में स्थित हो जाएं - "मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ" - तो देहभान, भय और अशांति का अंधकार स्वतः समाप्त होने लगता है।

आज का समय तेजी से बदल रहा है। परिस्थितियां अचानक बदलती हैं, मानसिक तनाव बढ़ रहा है और संसार अनिश्चितता की ओर बढ़ता दिखाई देता है। इसलिए बाबा बार-बार बच्चों को "एवररेडी" बनने का संकेत दे रहे हैं। एवररेडी होने का अर्थ केवल तैयारी करना नहीं, बल्कि ऐसा अनुभव जमा करना है कि संकल्प करते ही आत्मा उसी स्वरूप में स्थित हो जाए। परिस्थिति आने पर सोचने का समय नहीं मिलता; उस समय वही अनुभव काम आता है जो हमने पहले से अपने भीतर पक्का किया है।

बाबा चाहते हैं कि हमारा स्वमान इतना सहज और स्वाभाविक बन जाए जैसे हमें अपना नाम याद रहता है। हमें अपने नाम को याद करने की मेहनत नहीं करनी पड़ती, क्योंकि वह हमारी पहचान बन चुका है। उसी प्रकार आत्मा का स्वरूप भी हमारी सहज अनुभूति बन जाना चाहिए।

आज दुनिया को केवल बोलने वाले लोग नहीं चाहिए, बल्कि ऐसी अनुभवी आत्माएं चाहिए जिनकी उपस्थिति से शांति का अनुभव हो। इसलिए बाबा हम बच्चों को अब केवल पुरुषार्थी नहीं, बल्कि अनुभवीमूर्त बनाना चाहते हैं।

आइए, हम स्वयं से यह संकल्प करें -
हम केवल ज्ञान सुनने वाले नहीं बनेंगे, बल्कि ज्ञानस्वरूप बनेंगे।
हम परिस्थितियों से लड़ेंगे नहीं, बल्कि स्वमान का स्विच ऑन करेंगे। और ऐसा योगी जीवन जियेंगे, जो स्वयं भी शांत हो और संसार को भी शांति का अनुभव कराए।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

टीचर माना निमित्त भाव, मैंपन नहीं

बाबा ने कहाँ-कहाँ से ढूंढ के टीचर बनाया है। कोई को किस कोने से, किसको किस कोने से चुना, कमाल तो बाबा की है जो हमको चुना और टीचर बनाया, अभी हमको क्या करना है? जो बाबा की आशायें हैं हमारे लिए वो पूर्ण करनी हैं क्योंकि टाइम का तो कोई भरोसा नहीं है। अचानक का पाठ तो बाबा कितने समय से सुना रहे हैं, तो हमको क्या बनना पड़ेगा? एवररेडी। समय को हम नहीं देखें, समय का इंतज़ार नहीं करना है लेकिन अपना इंतज़ाम सदा के लिए करना है। कोई भी समय सेकण्ड में आज आ जाए, कुछ भी हो जाए तो हम एवररेडी रहें। कल विनाश हो जाए तो तैयार हैं? तैयार तो हो जाएंगे लेकिन जो बाबा कहता है समान, सम्पन्न बनें वो तैयारी है? क्योंकि हमको बाबा के साथ राजधानी में आना है। ऐसे नहीं कहीं भी आये, आयेंगे तो सही वो तो शरीर छूटना ही है। लेकिन नहीं जो लक्ष्य बाबा का है, टीचर को बाबा कितना बड़ा स्वमान देता है, गुरुभाई। बच्चा भी नहीं कहता है, भाई कहता है जो भाई-भाई होते हैं वो समान होते हैं। तो इतना टाइटल बाबा देता है उस टाइटल के अनुसार अपने को चेक करें। बाबा ने कहा है ब्रह्मा बाबा के समान और सम्पन्न बनने का लक्ष्य रखो। तो रोज़ अपने आपको चेक करें कि आज जो दिन बीता ब्रह्मा बाप के समान और सम्पन्न बीता? रात को सोने से पूर्व बाबा को सारे दिन का पोतामेल सुनाओ। दिनचर्या के प्रमाण हमारा क्या-क्या हुआ, वो रिज़ल्ट बाबा को सुनाना है। अच्छी बात यह है कि मानो हमारे से छोटी-मोटी गलती हो गयी, संस्कार मिलाने में, कभी बिन्दी लगाने में देरी हो जाती है तो बाबा को फौरन सुनाकर बाबा से माफी ले लो क्योंकि बाबा कहते टीचर बनकर कोई धर्मराजपुरी में जाये यह बाबा को अच्छा नहीं लगता है। मानो आपने गलती की तो बाबा को दे दिया ना, तो दी हुई चीज़ कभी वापस नहीं ली जाती है। वो बुरा माना जाता है, मानो आप कोई चीज़ किसी को दे दो और फिर गलती से वह आपके पास आ जाए तो क्या आप उसे अपनी अलमारी में रखेंगे? नहीं, क्योंकि अब वह दूसरे की हो गई। तो ऐसे ही जो चीज़ हमने बाबा को दे दी वो दी हुई चीज़ फिर वापस नहीं ली जाती है। इसको पाप कहा जाता है। इसीलिए जो भी कुछ है बाबा को दे दिया फिर वापस नहीं लेना। नहीं तो इसका बहुत हिसाब-किताब बनता है।

तो टीचर माना अपने को सदा एवररेडी रखना, आज भी विनाश हो जाये तो मैं तैयार हूँ! ऐसे नहीं थोड़ा-सा रहा हुआ है, कभी-कभी लेकिन विनाश तो अचानक होना है। इसलिए बाबा कहते हैं अपनी कोई भी कमज़ोरी बाबा को दे दो, तो दी हुई चीज़ फिर आपके पास वापस आयेगी, तो भूल से भी वापस नहीं लेना।

टीचर माना एक तो पहले निमित्त भाव, मैंपन नहीं। थोड़ा ही भाषण बहुत अच्छा करते हैं तो समझते हैं मैंने तो, मैंने तो... अरे, बाबा ने कराया, तुमने क्या किया? तो मैंपन नहीं हो इसके लिए बाबा कहते हैं निमित्त भाव हो। कुछ भी हुआ लेकिन अच्छाई में मैंपन ज़रूर आता है, अच्छा किया तो दिल में आता ज़रूर है कि मैंने बहुत अच्छा भाषण किया, मेरे से जिज्ञासु बन गया। लेकिन बाबा ने टच किया या आपने किया! आप तो निमित्त बनी ना, तो एक निमित्त दूसरा निर्मान क्योंकि आपस में इकट्ठे रहते हैं ना, उसमें एक जैसे भी होते हैं तो थोड़ा-सा आ जाता है... मैं भी कम नहीं, यह अभिमान आ जाता है। और तीसरा निर्मल वाणी। कभी-कभी वाणी से भी जो आता वो बोल देते हैं फिर कहेंगे मेरा भाव नहीं था लेकिन ऐसे ही बोल दिया। भाव था तभी तो निकला ना! तो यह तीन बातें बाबा ने अटेन्शन खिंचवाने के लिए कहा है, तो निमित्त भाव ज़रूर होना चाहिए।

हर एक को शुभ भावना, शुभ कामना देना अर्थात् सूक्ष्म दुआयें देना

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जब हम सम्पन्नता का सोचते हैं तो हमारा अटेन्शन जाता, सम्पन्न बनना अर्थात् कर्मातीत बनना। तो हम सम्पन्न बनें अर्थात् बाप समान बनें, कर्मातीत बनें। तो हमारे पुरुषार्थ का अन्तिम पेपर भी कर्मातीत बनना है। तो कर्मातीत बन रहे हैं या कोई सूक्ष्म कर्म के खाते बन तो नहीं रहे हैं? अगर संकल्प व्यर्थ जाते तो क्या वह व्यर्थ संकल्प हमें कर्मातीत बनायेगा? व्यर्थ संकल्प से समय भी वेस्ट, संकल्प श्वास भी वेस्ट, शक्ति भी वेस्ट तो कर्मातीत कैसे बनेंगे।

तो ध्यान रखना है कि हमारी दिनचर्या में किसी प्रकार का भी स्वयं के प्रति अथवा दूसरों के प्रति व्यर्थ संकल्प न चले। हम आये हैं स्वयं की गति सद्गति करने, तो हमारा दूसरों के पीछे समय क्यों वेस्ट हो, इसलिए न श्वास वेस्ट करो, न समय, न संकल्प। बाबा ने हम सबको टाइटल दिया है सर्व के शुभचिंतक। तो सबके प्रति शुभ भावना रखो, शुभ सोचो, कल्याण की भावना रखो।

अगर कारणे-अकारणे कोई भी कुछ करता उसके लिए भी हमारा संकल्प चलता, तो उसमें भी हमारी एनर्जी वेस्ट जाती। तो अब बाबा ने हम सबको सम्पन्नता का इशारा दिया है इसलिए कोई भी संकल्प व्यर्थ नहीं होना चाहिए। हरेक का ड्रामा में अपना-अपना पार्ट है, हमें हर बात के पीछे शुभ सोचना है और शुभ भावना रख कार्य व्यवहार में भी शुभ वृत्ति को अपनाना है। शुभ भावना ही हमारी मुख्य सेवा है। और सेवा न भी करें, शुभ भावना रखें तो भी चारों तरफ अच्छे वायब्रेशन फैलते रहेंगे।

हर एक को शुभ भावना, शुभ कामना देना अर्थात् सूक्ष्म दुआयें देना जिसको बाबा ने कहा है दुआ देना अर्थात् दाता बनना। तो हमें दाता बनके दुआयें देनी और लेनी हैं। दुआयें सिर्फ देनी नहीं होती परन्तु रिटर्न में दुआयें ऑटोमेटिक मिलती हैं।

अगर कोई प्रैक्टिकल हमसे अनुभव पूछे तो मैं कहती कि बाबा ने मुझे दुआओं में पाला है और दुआओं से आगे बढ़ाया है।

हमें सबकी दुआयें मिलती इससे बड़ा और क्या वरदान है। दुआयें ही वरदान हैं। उन दुआओं का आधार है सदा सर्व के लिए शुभ सोचना और शुभ सोचने वाले में "मैं-मैं-मैं" नहीं रहती। आप-आप-आप। मैं, मैं करने से दुआ के बदले दूसरों से बद्दुआ मिलती, शुभ भावना से आप-आप करो तो दुआयें मिल जाती। तो हम हैं दाता के बच्चे, हमें देना है न कि लेना है। सब देना सीखो, देने में स्वतः मिल जाता माना लेना होता है।

बाबा ने हमें मंत्र दिया है - निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनो। यही अन्तिम महावाक्य याद रखो तो सम्पन्न बन विजय माला के रत्न बन जायेंगे। हमें बाबा के गले का विजयी रत्न बनना है इसलिए सम्पन्नता माना विद ऑनर्स पास होना अर्थात् कर्मातीत बनना। तो मैं मन, वचन, कर्म से, दृष्टि, वृत्ति से बाप के समान कल्याणकारी हूँ? हमारे सामने साकार बाबा एग्जाम्पल है। तो बाबा को फॉलो करते-करते हम बाबा के समान फरिश्ता बनेंगे। तो यह सम्पन्नता की स्थिति का पुरुषार्थ करने से जो कभी-कभी उदासी या टेन्शन आदि होता वह सब खत्म हो जायेगा।

कई बार बाबा हमें समय की सूचना देते कि बच्चे समय को देखते हो, तो तुमको बेहद का वैरागी अथवा उपराम रहना है। जितना बेहद के वैरागी, त्यागी बनेंगे अर्थात् उपराम रहेंगे, उतना ऑटोमेटिकली हमारी याद की यात्रा पॉवरफुल होती जायेगी। यह अशरीरी बनने का अभ्यास सम्पन्न बनने में हमें बहुत मदद करता है।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

जितना न्यारा रहेंगे उतना प्यारा रहना सहज हो जाएगा

बाबा हमारी महिमा करके हमें महिमा योग्य बना रहा है। हम अपने मुख से अपनी महिमा नहीं करेंगे, पर बाबा ऐसा योग्य योगी बना रहा है। तो ऐसे मीठे बाबा को किन शब्दों में महिमा करें, शब्द ही नहीं।

अतीन्द्रिय सुख में रहना और स्वीट साइलेंस में रहना, इसमें पहले कौन-सा? जो थोड़ा उथल-पाथल में होता है वो अतीन्द्रिय सुख में नहीं रह सकता है। कभी सुख रहता है, कभी थोड़ा दुःख की फीलिंग में आ जाता है तो वो स्वीट साइलेंस में कैसे जा सकता है! इसके लिए बाबा कहते राजयोगी का कोई भी देहधारियों से सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। जितना न्यारा रहेंगे उतना प्यारा रहना सहज होगा। न्यारे रहने की विधि यथार्थ है तो अपने लिए और परिवार के लिए प्यार स्वतः होगा। बाहर वाले कहते छोटा परिवार सुखी परिवार और बाबा कहते हैं जितना बड़ा परिवार उतना सुखी परिवार है। हमारे इतने बड़े परिवार का संगठन देख दुनिया वाले खुश होते हैं।

हम सब भगवान के बच्चे हैं, एक परिवार है। आपस में मिलकर रहने वाला परिवार है। हरेक स्वतंत्र है, अपने पैर पर खड़ा है इसलिए इतना बड़ा परिवार होते भी किसी पर कोई बोझा नहीं है। तो हम किसके हैं और हमारा कौन है? यह नशा हम सबको है। हम यहाँ सब धर्म, जाति, रंग, भाषा से परे रहने की, भेदभाव को मिटाने की सेवा कर रहे हैं। एक बाप की श्रीमत पर चलने से कितना हम सुधर रहे हैं, सम्पूर्ण बने नहीं हैं परन्तु सम्पूर्ण बनने के बिगर और कुछ करना ही नहीं है। समय अनुसार हम बनेंगे तो और बनेंगे। हम सुधर रहे हैं तो दुनिया भी सुधर रही है। तो हमारी तात, लात और बात यही है, सेवा भी यही है। अपनी स्थिति ऐसी बनाकर रखने की तात है, औरों को सुनाने की लात(लत-आदत) है और कोई बात है ही नहीं।

कई भाई-बहनें बाबा का नाम लेकर अपना काम उतार देते हैं क्योंकि वो अपनी बुद्धि से काम लेते हैं तो ऐसी आत्माएं बाबा से शक्ति नहीं खींच सकती हैं। अभिमान वाली बुद्धि होने के कारण बाबा की उतनी ऊंची मीठी बातें बुद्धि में ग्रहण नहीं होती। अनेक बातों में जहाँ ज़रूरत नहीं वहाँ भी अपनी बुद्धि चला लेते हैं। नेचर और किसकी, बुद्धि अपनी चला देते हैं। उस घड़ी ये नहीं समझते हैं कि यह व्यर्थ है। थोड़ा भी अन्दर व्यर्थ है तो समर्थ संकल्प रह नहीं सकता। व्यर्थ, बाबा की शक्ति से वंचित कर देता है। एक ही टाइम पढ़ाई भी हो, कमाई भी हो और दान भी करो। पढ़ाई में कमाई नहीं की, पढ़ाई का फायदा नहीं लिया। पढ़ाई पढ़के टीचर बना तो क्या बड़ी बात की? टीचर का जॉब क्या होता है? इतना ऊंचा बाबा हमको पढ़ाता और हम भी केवल टीचर ही बने तो क्या बड़ी बात की! बाबा खुश किसमें होगा? जिसको ऊंच पद पाने की धुन लगी हुई है, बाबा उनको अन्दर से बहुत प्यार करता है। टीचर भी समझता है कि होमवर्क अच्छा करता है, औरों को भी मदद करता है। कोई पढ़ाई में आगे जाता है तो उसको जेलसी नहीं होती है, खुशी होती है, हम मिल करके पढ़ रहे हैं। तो खुद पढ़ाई में होशियार बन अन्य साथियों को भी सहयोग दे उनको आप समान लायक बनाना है। हमारे अन्दर पढ़ाई की वैल्यू है तो कमाई स्वतः होती है और जिसकी कमाई अच्छी होती है वो दानी, महादानी, वरदानी बन जाता है।